International Indexed & Referred Research Journal, ISSN- 2250-2556; VoL. I *ISSUE-1, April, 2012.

शोध पत्र- हिन्दी

हिन्दी पत्रकारिता और माखनलाल चतुर्वेदी

* क. अल्का हिरकने

भारतीय पत्रकारिता एवं भारतीय नव जागरण दोनो का ही प्रारम्भ अन्योन्याश्रित है। भारत में 19वी सदी से अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार हो रहा था। जनता मे धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आंदोलनो की तीव्र प्रतिक्रियाएँ चल रही थी, और सुधारवादियों तथा परम्परावादियों में होने वाले वाद–विवाद से काफी सनसनी थी।

राजनैतिक जीवन का जहॉ तक संबंध है सन् 1857 की क्रांति और उसके बाद घट रही घटनाओं से लोग आतंकित थे। उस समय ऐसी परिस्थितियॉ उत्पन्न हो रही थी, जिनसे लोगों मे खबरों को जानने की जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी। ऐसी स्थिति में यह जिज्ञासा केवल पत्रों के माध्यम से ही शांत हो सकती थी। शासन की नीतियों, नये सिद्धांतो का भारतीय जनमत के सामने आने के लिये कोई वैधानिक साधन या व्यापक राजनैतिक संगठन ना होने के कारण समाचार पत्र ही एकमात्र साधन थे, जो जनता की जिज्ञासाओं को पूरा करके उन्हे नयी जानकारी उपलब्ध करा सकते थे। साथ ही जनता की शिकायतें भी सामने आ सकती थी। इस प्रकार से समाचार पत्र प्रचार–प्रसार के प्रमुख साधन के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण होते गये।

इस संदर्भ मे देखें तो माखनलाल चतुर्वेदी की पत्रकारिता सोदेद्श्य थी। उसका प्रमुख उद्देश्य स्वतंत्रता आंदोलन को सहयोग करना तथा उस समाज का निर्माण करना था जो स्वतंत्रता का उत्तराधिकारी था। यही कारण था कि उनकी रचनाओं निबंध आदि में प्रायः राष्ट्र, समाज, धर्म, आदर्श, मानवता से संबंधित सामग्री रहती थी।

माखनलाल चतुर्वेदी का काल पत्रकारिता के मूल्य निर्माण का काल था, जिसमें वर्तमान की विषम परिस्थितियों से संघर्ष करते हुये भी भविष्य के लिये नैतिक मुल्यों का निर्माण करने के साथ साथ मार्ग–प्रदर्शन करने की उर्जा संचरित थी। चतुर्वेदी जी सन 1907 से ही मराठी पत्रिका 'सुबोध' सिंधु के हिन्दी संस्करण में लेख समाचार आदि लिखने लगे। पत्रकारिता में प्रवेश के साथ–साथ धीरे–धीरे उनकी पत्रकारिता विकसित होती रही तथा आगे चलकर 'कर्मवीर' के माध्यम से अपने चरम रूप में उदघाटित हुई।

माखनलाल जी ने जिस समय लिखना प्रारम्भ किया था, उन दिनो देश परतंत्र था। तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नही थी। अतः उन्होन छदम् नामों का सहारा लेकर जनता के मानषपटल को उद्देलित करने वाले लेख लिखने प्रारम्भ किये। माखनलाल जी का पत्रकारिता में व्यवस्थित प्रवेश सन् 1913 में ''प्रभा'' मासिक पत्रिका के माध्यम से हुआ। वे इसके संपादक थे, उनकी कार्यकुशलता मेहनत व लगन से ''प्रभा'' को अखिल भारती ख्याति प्राप्त पत्रिका का सम्मान मिला।

राजनीति तथा आम जनता के बीच संप्रेषण के साथ ही हिन्दी पत्रकारिता में तीव्र गति बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ में ही आ पायी। '' 20 शताब्दी के दुसरे दशक में मध्यप्रदेश की राजनैतिक चेतना को अभिव्यक्ति प्रदान करने की लिये जबलपुर से पत्र प्रकाशन की योजना बनी। माधवराव सप्रे, विष्णुप्रसाद शुक्ल जी की प्रेरणा से ''कर्मवीर'' साप्ताहिक का प्रकाशन मध्यप्रदेश की पत्रकारिता की ऐतिहासिक घटना ही नही, इतिहास बदलने वाली घटना है। ''1. ''कर्मवीर'' के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन का प्रचार प्रसार जन–जन तक हुआ। राष्ट्रीय जागरण और राष्ट्रीय समस्याओं को मुखरित करने के लिये ''कर्मवीर'' राष्ट्रीय मंच के रूप में सामने आया। यह वह समय था जब पत्रकारिता का पहला कदम पड़ा था। पत्र–पत्रिकाओं और साहित्य की अब जन–जीवन को प्रभावित करने वाले राजनैतिक परिदृश्यों के सही मायने में मार्ग बन रहे थे।

सन् 1920 में जबलपुर से प्रकाशित कर्मवीर का संपादन करते हुये चतुर्वेदी जी एक स्वतंत्र और गरिमाशाली पत्रकार व्यक्तित्व के निर्माण की ओर अग्रसर हुये। एक योग्य संपादक का दायित्व निर्वाह करते हुये उन्होनें लोकजीवन को जागरूक, गतिशील, सहज और स्वतंत्र बनाकर सामाजिक चेतना के प्रत्येक स्तर पर पत्रकारिता के माध्यम से अपनी जिम्मेदारी व कर्तव्यों का पूरी तरह निष्ठा से निर्वाह किया।

माखनलाल चतुर्वेदी जी का समूचा व्यक्तित्व अपने समय की देन है, या कि उनका युगबोध और चेतनाशील होने का परिणाम। उनके क्रियात्मक अपने समय की परिस्थितियों के प्रतिकुल होने पर भी अपने समाज और राष्ट्र को निरंतर सुनहरे भविष्य की ओर ले जाने के लिये सतत् प्रयास का परिमाण है। चतुर्वेदी जी का साहित्य चाहे वह गद्य हो या पद्य महज एकांत में बैठकर मानसिक अनुभूति के परिणाम स्वरूप नही है, और ना ही बैठे बैठे साहित्य रचने का शौक। उनके साहित्य में तो स्वयं रचयिताओं के जीवन युध्द से अपने लिये जीवन रस प्राप्त किया है, और उन्ही की जीवन अनुभूति से उर्जा ग्रहण किया है, वे लिखते हैं –

" क्या ? देख न सकती जंजीरो का गहना ,
हथकड़ियॉ क्यों? यह ब्रिटिश राज्य का गहना "

इससे स्पष्ट होता है कि चतुर्वेदी जी सरकार की काल कोठरियों को निकट से देख और भोग चुके थे। वे स्वतंत्रता युग की तपिश मे तप चुके थे, वे स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये भारतीयों द्वारा किये जा रहे प्रयासों में प्रत्यक्ष रूप से शामिल थे। एक भारतीय आत्मा कहलाने वाले चतुर्वेदी जी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अप्रतिम योध्दा थे। अपने राष्ट्रप्रेम से वशीभूत होकर

उन्होने राष्ट्र स्वातंत्रय के प्रयासो में कारावास की यातना को सहा। उन्होने कभी अपनी मान्यताओं से आदर्शो से समझौता नही किया तथा निरंतर रूप से अपने सिध्दांतो और अपनी संस्कृति की तपिश से अपने आपको तपाते रहे, और इतिहास में अपनी पहचान बनाने मे सफल रहें। माखनलाल जी, गंभीर चिन्तक थे, पराधीन भारत को स्वतंत्र कराने के लिये उन्होने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हिस्सा लिया। पत्रकारिता के माध्यम से उन्होने नव–जागरण और लोकरूचि के परिस्कार का महत्वपूर्ण कार्य किया। उनकी पत्रकारिता एक मिशन थी। उन्होने समय–समय पर पत्रकारिता से संबंधित विचार व्यक्त किया। वे समाचार पत्रों को ज्ञान और घटनाओं का नियंत्रक और संचालक मानते थे। उनका मत था कि समाचार पत्रों का प्रमुख कार्य है, लोकमत का निर्माण करना। '' पत्रकार की भूमिका लोकनायक की भूमिका होती है।'' [2]. चतुर्वेदी जी की दृष्टि दूरस्थ थी, जिसमें सत्य को देखने की क्षमता थी, इसलिये वे एक पत्र संपादक को महत्वपूर्ण के प्रति जिम्मेदार मानते थे।जनता में क्रांतिकारी भावना का उदय करने के लिये चतुर्वेदी जी हर पल प्रयासरत थे, तत्कालिन सरकार द्वारा जब उन नेताओं को गिरतार कर लिया गया, उनका राष्ट्रीय प्रेम हर परिस्थितियों में सशक्त था। जेल के द्वार पर पहुॅचकर उन्होने कुछ पंक्तियॉ कही थी –'

' पिंजड़े के द्वार खड़ा हूँ मुझे याद रखो, कौन को लिख्य रखो जीते रखो याद रखो।/ फूलों के हार नही हार से डरना सीखूं,/ प्यार जंजीरों से पाने को लिपटना सीखूं।।/ लेके बेंत नये मैं रस्सियाँ कसना सीखूं,/ बढ़के जाते हुये स्वच्छन्द हूँ पद रखना सीखूं।/ मातृवेदी पर यह बलिदान तो होने ही को था,/ आज या कल यहाँ मेहमान तो होने ही को था।।''[3].

यही नही उनका राष्ट्रीय प्रेम व आंदोलनकारी भावना का सटीक उदाहरण तब मिलता है जब वे जेल में होते है, वहॉ उन्हे बेंतो से सजा दी जाती है। मित्रों द्वारा समझाने पर कि वे स्वयं को बचा ले यह दण्ड उनके कोमल शरीर के लिये नही है तब वे लिखते हैं –

'मत व्यर्थ पुकारो शूल–शूल,कह फूल फूल सह फूल–फूल।/ हरि को ही तल में बंद किये,/ केहरि से कह नख हूल –हूल।।/ कागों का सुन कर्तव्य राग,/ कोकिल काकलि को भूल–भूल।/ सुरपुर तज वे आराध्य कहे,/ तो चल रौरव के कूल–कूल।।''[4]

पूर्व में जो पत्रकारिता थी वह साहित्य की ओर थी, वह अब राजनीति की ओर मुड़ गई थी, और इसका श्रेय तत्कालिन महानायको को जाता है। इसी वातावरण में माखनलाल चतुर्वेदी को जिन्हे साहित्य समाज में एक 'भारतीय आत्मा' की संज्ञा दी जाती है, जो तत्कालिन राजनीति के कर्ता – धर्ता और अग्रिम श्रेणी के नेता–नायक थे, जिन्होने पत्रकारिता को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। उन्होने 'प्रभा', 'कर्मवीर', आदि क्रमशः मासिक पत्रिका एवं साप्ताहिक पत्र निकाले तथा अन्य पत्र–पत्रिकाओं के लिये भी अपना योगदान दिया। सन् 1903 अप्रैल में 'प्रभा' के पश्चात् इसी वर्ष अक्टूबर में प्रताप साप्ताहिक निकला, 'प्रताप' के प्रारंभिक समय में ही चतुर्वेदी ने 'चेतावनी' शीषर्क से कविता लिखकर ''एक भारत की आत्मा'' नामक लेखक की ओर से प्रकाशनार्थ भिजवाया था। कविता की कुछ पंक्तियॉ –

'' हे दीन भारत को जगाने आ चुकी अब भारती,/ बढ़कर किया ही चाहते हैं कार्य विद्यार्थी व्रती।/ वे ब्रह्मचारी वीर–धारी आत्मत्यागी देश को,/ अवरुद्ध उन्नति–मार्ग मिलकर शीघ्र अपना खोल,/ होकर हमारे साथ 'भारतवर्ष' की जय बोल दो। '' [5].

माखनलाल जी पत्रकारिता को दुनिया की एक बड़ी ताकत मानते थे। वे उसे उच्च पद पर रखते थे, किंतु साथ ही वे यह भी मानते थे कि इस उच्चता के साथ ही उसके उत्तरदायित्वों का प्रारम्भ हो जाता है। इसके साथ ही वे मानते थे कि भविष्य में पत्रकारिता के मूल्य और उत्तरदायित्व बढ़ जायेंगे। ऐसी स्थिति मे यह आवश्यक था कि पत्रकारिता को चुनने वाले लोग भी योग्य हो जिससे वे अपने उत्तरदायित्वों का भली प्रकार से निर्वाह कर सकें। इसके लिये वे इच्छा रखते थे कि देश में संपादन कला के विद्यापीठ स्थापित किये जाये, जो अनुभवी तथा मेहनती, लगनशील व्यक्तियों द्वारा संचारित हो। वे यह चाहते थे कि पत्रकार और पत्रकारिता दोनो ही सुरक्षित रहते हुये स्वतंत्र रहकर अधिकाधिक काम कर सकें। स्पष्ट है कि माखनलाल जी की पत्रकारिता आदर्श पत्रकारिता थी, जिसमें सिद्धांत थे। उनके इन सिद्धांतो और संकल्पो से परवर्ती पत्रकारिता का प्रभावित होना स्वाभाविक था। माखनलाल चतुर्वेदी के पत्रकारिता में प्रवेश करने के बाद ही हिन्दी पत्रकारिता को एक ऐसा वक्ता मिला जो नये विचार और राष्ट्रियता से ओतप्रोत था। यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि माखनलाल जी राजनीति में सक्रिय भागीदारी होते हुये भी साहित्य के क्षेत्र में उनकी स्थिति सुदृढ़ थी। उन्होने एक साहित्यकार और रचनाकार के रूप में राजनीति और पत्रकारिता में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होने पत्रकारिता के क्षेत्र में आकर परवर्ती पत्रकारिता की दिशा निर्धारित की। संक्षेप में कह सकते है कि पत्रकारिता में आदर्श दृष्टि से समस्त हिन्दी पत्रकारिता पर माखनलाल चतुर्वेदी की पत्रकारिता का प्रभाव स्पष्ट रूप से रहा है। माखनलाल चतुर्वेदी जी ने अपने दीर्घ पत्रकारीय जीवन में जो आदर्श मूल्य तथा विश्वसनीयता हिन्दी पत्रकारिता को विरासत में प्रदान की है, वह हिन्दी पत्रकारिता का मार्ग प्रशस्त ही नही करती अपितु अद्यतन पत्रकारिता में प्रासंगिक भी है।

संदर्भ ग्रंथ

** शोधार्थी हिन्दी, डॉ. हरिसिंह गौर, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर मध्यप्रदेश*

1. माखनलाल चतुर्वेदी – श्री कांत जोशी, साहित्य अकादमी – 1989 – 252. पत्रकारिता एवं संपादक कला – एन0सी0 पंत, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली – 1993 – 23. माखनलाल चतुर्वेदी – यात्रा पुरूष – श्री कांत जोशी नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली – 674. माखनलाल चतुर्वेदी – यात्रा पुरूष – श्री कांत जोशी नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली – 1355. माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली – श्री कांत जोशी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली – 1983 – 177